❁ 30 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] सब तो 84 जन्म नहीं लेते हैं। भारतवासी खण्ड गाया हुआ है। जब भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तब इसे नई दुनिया, नया भारत कहा जाता था। अभी है पुरानी दुनिया, पुराना भारत। वह तो सम्पूर्ण निर्विकारी थे, कोई विकार नहीं थे। वह देवतायें ही 84 जन्म ले अभी पतित बने हैं। काम का भूत, क्रोध का भूत, लोभ का भूत– यह सब कड़े भूत हैं। इनमें मुख्य है देह-अभिमान का भूत।

2] गीता में भी है भगवानुवाच– काम महाशत्रु है। भारत का वास्तविक धर्मशास्त्र है ही गीता। हर एक धर्म का एक ही शास्त्र है। भारतवासियों के तो ढेर शास्त्र हैं। उसको कहा जाता है भक्ति।

3] विकार में जाना गायो एक-दो पर काम कटारी चलाना। मनुष्य कहते हैं यह तो भगवान की रचना है ना। परन्तु नहीं, भगवान की रचना नहीं, यह रावण की रचना है। भगवान ने तो स्वर्ग रचा। वहाँ काम कटारी होती नहीं। ऐसे नहीं दु:ख सुख भगवान देता है। अरे, भगवान बेहद का बाप बच्चों को दु:ख कैसे देगा। वह तो कहते हैं मैं सुख का वर्सा देता हूँ फिर आधाकल्प के बाद रावण श्रापित करते हैं। सतयुग में तो अथाह सुख थे, मालामाल थे।

4] भगवानुवाच मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखलाता हूँ। तुम भविष्य में यह बनेंगे। राजाई की पढ़ाई और कहीं नहीं मिलती। बाप ही पढ़ाकर नई दुनिया की राजधानी देते हैं। सुप्रीम फादर, टीचर, सतगुरू एक ही शिवबाबा है। बाबा माना जरूर वर्सा मिलता चाहिए। भगवान जरूर स्वर्ग का वर्सा ही देंगे। रावण जिसको हर वर्ष जलाते हैं, यह है भारत का नम्बरवन दुश्मन। रावण ने कैसा असुर बना दिया है। इनका राज्य 2500 वर्ष चलता है। तुमको बाप कहते हैं मैं तुमको सुखधाम का मालिक बनाता हूँ। रावण तुमको दु:खधाम में ले जाते हैं। तुम्हारी आयु भी कम हो जाती है।

5] बाप इस रथ द्वारा बैठ समझाते हैं, इनके बाजू में आकर बैठते हैं तुमको पढ़ाने। तो यह भी पढ़ते हैं। हस सब स्टूडेन्ट हैं। एक बाप ही टीचर है। अभी बाप पढ़ाते हैं। फिर आकर 5000 वर्ष के बाद पढ़ायेंगे। यह ज्ञान, यह पढ़ाई फिर गुम हो जायेगी। पढ़कर तुम देवता बनें, 2500 वर्ष सुख का लिया फिर है दु:ख, रावण का श्राप। अभी भारत बहुत दु:खी है। यह है दु:खधाम।

6] माला होती है 8 की। वह है पास विद् ऑनर। फिर 108 की माला भी होती है, वह माला की सिमरी जाती है। मनुष्य इसका रहस्य थोड़ेही समझते हैं। माला में ऊपरी है फूलर फिर होता है डबल दाना मेरू। स्त्री और पुरूष दोनों पवित्र बनते हैं। यह पवित्र थे ना। स्वर्गवासी कहलाते थे। यही आत्मा फिर पुनर्जन्म लेते-लेते अब पतित बन गई है। फिर यहाँ से पवित्र बन पावन दुनिया में जायेंगे। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है ना। विकारी राजायें निर्विकारी राजाओं के मन्दिर आदि बनाकर उन्हों को पूजते हैं। वही फिर पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। विकारी बनने से फिर वह लाइट का ताज़ भी नहीं रहता है। यह खेल बना हुआ है। यह है बेहद का वन्डरफुल ड्रामा। पहले एक ही धर्म होता है, जिसको राम राज्य कहा जाता है फिर और-और धर्म वाले आते हैं। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है सो एक बाप ही समझा सकते हैं। भगवान तो एक ही है।

7] बापदादा द्वारा समय प्रति समय जो भी वरदान मिले हैं, उन्हें समय पर कार्य में लगाओ। सिर्फ वरदान सुनकर खुश नहीं हो कि आज बहुत अच्छा वरदान मिला। वरदान को काम में लगाने से वरदान कायम रहते हैं। वरदान तो अविनाशी बाप के हैं लेकिन उसे फलीभूत करना है।

8] जिनकी नज़रों में बाप है उन्हें माया की नज़र लग नहीं सकती।

...2

❁ 30 सितम्बर 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

[2]

✺ योग-

1] – – –

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– तुम बेहद के बाप पास आये हो विकारी से निर्विकारी बनने, तुम्हारे में कोई भी भूत नहीं होना चाहिए।

2] तुम संगम पर पढ़ते हो इसका फल सतयुग में मिलेगा। यहाँ जितना पवित्र बनेंगे और पढ़ेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। ऐसी पढ़ाई कहाँ होती नहीं। तुमको इस पढ़ाई का सुख नई दुनिया में मिलेगा। अगर कोई भी भूत होगा तो एक तो सजा खानी पड़ेगी, दूसरा फिर वहाँ कम पद पायेंगे। जो सम्पूर्ण बन औरों को भी पढ़ायेंगे तो ऊंच पद भी पायेंगे। कितने सेन्टर्स हैं, लाखों सेन्टर्स हो जायेंगे। सारे विश्व में सेन्टर्स खुल जायेंगे। पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनना ही है। तुम्हारी एक ऑबजेक्ट भी है।

3] अभी तुम्हारे में कोई भी विकार नहीं होना चाहिए परन्तु अधाकल्प की बीमारी कोई जल्दी थोड़ेही निकलती है। उत्त पढ़ाई में भी जो अच्छी रीति नहीं पढ़ते हैं वह फेल होते हैं। जो पास विद् ऑनर होते हैं वह तो स्कॉलरशिप लेते हैं।

4] वरदान को बार-बार स्मृति का पानी दो, वरदान के स्वरूप में स्थित होने की धूप दो तो वरदानों के फल स्वरूप बन जायेंगे।

✺ सेवा-

1] तुम्हारे में भी जो अच्छी रीति पवित्र बन और फिर दूसरों को बनाते हैं, तो यह प्राइज़ लेते हैं।